वर्ष २०२० के लिए श्रीगुरुमाई के सन्देश पर आधारित कहानियों का परिचय

मॉर्गन हूपर द्वारा लिखित

सहस्रों वर्षों से, साधकों के लिए साधना व धर्मपरायण जीवन व्यतीत करने के विषय में जानने का जो सबसे शिक्षाप्रद व आनन्दप्रद तरीक़ा रहा है, वह है, कहानियों में निहित ज्ञान को ग्रहण करना। आध्यात्मिक खोज से सम्बन्धित कहानियाँ दोनों ही तरह के विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा व उत्साहवर्धन का स्रोत हैं—वे जो समर्पित विद्यार्थी हैं और वे जो अब तक अपनी ज्ञान-पिपासा को पहचान नहीं पाए हैं।

कुछ कहानियाँ सरल होती हैं, स्पष्ट होती हैं; वे सीधे आपके हृदय में प्रवेश कर जाती हैं और तुरन्त ही अपना प्रतिफल प्रदान करती हैं। कुछ दूसरी कहानियाँ 'टाइम कॅप्सूल' [ऐसा ऐतिहासिक कोश जिसमें जानकारी अथवा सामग्री को संग्रहीत किया जाता है ताकि भावी पीढ़ियों के लिए वह उपलब्ध हो सके।] की भाँति होती हैं; उन पर चिन्तन-मनन करते रहने से उनका अर्थ धीरे-धीरे या उपयुक्त समय पर प्रकट होता है। किसी भी उत्कृष्ट कहानी का असली जादू तो यह है कि वह सुनने वाले हर एक व्यक्ति के लिए अपने आप में अनोखी होती है। हो सकता है कि हम सब किसी कहानी को एक-से ही शब्दों में सुनें, पर उसका *अनुभव,* उससे मिली शिक्षाएँ व उससे हमने जो निष्कर्ष खोज निकाला हो, वे पूरी तरह हमारे अपने ही होते हैं।

एक अमर कहानी वह होती है जो युगों-युगों तक गूँजती रहे, जो सांस्कृतिक सीमाओं के अन्तर को मिटा दे और स्पष्ट दिखाई देने वाली बाधाओं को लाँघ जाए। ऐसा क्यों है? मुझे एक नाटक याद आ रहा है जो मैंने माली के तत्त्वज्ञानी व सूफ़ी सन्त तिएर्नो बोकार के बारे देखा था। उस नाटक में उनकी जीवन-गाथा और धार्मिक सहिष्णुता व सार्वभौमिक प्रेम के उनके सन्देश के बारे में बताया गया है। अपनी जीवन-यात्रा के अन्त की ओर बढ़ते हुए, तिएर्नो बोकार एक सन्देश देते हैं जो आज भी मेरे साथ बना हुआ है : "जीवन में तीन सत्य होते हैं—मेरा सत्य; तुम्हारा सत्य; और सत्य।"

पुरातन काल से ही कहानी सुनाने की कला वह साधन रही है जिससे इन तीनों सत्यों की खोज की जा सके। कहानियों में वह सामर्थ्य होती है जो हमें याद दिला सके कि ये चीजें मानवजाति के हर ज़माने में रही हैं—जीवन का अर्थ खोजने की लालसा, अपने आप को व अपने परिवेश को समझने

की लालसा, पारस्परिक बन्धनों व सम्बन्धों को बनाने की लालसा, ईश्वर को या सच्ची वास्तविकता को समझने की लालसा। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के लोगों ने एक-से मार्गों से शुरुआत की है, एक-से प्रश्नों के साथ अपने आप को दोराहों पर पाया है और अपने लक्ष्य तक पहुँचने का प्रयास किया है, और वह लक्ष्य है—ईश्वरानुभूति।

हमारे आदिकालीन इतिहासकार मानते हैं कि नृत्य और गान, कहानी कहने की कला के सर्वप्रथम उद्भव थे। हमारे पूर्वज नैसर्गिक घटनाओं को देखकर अवाक् थे—सूर्य व चन्द्रमा का उदय और अस्त होना, अग्नि व वायु का प्रत्यक्ष नृत्य, जंगली पशुओं का व्यवहार आदि, आदि। इन रचनात्मक अभिव्यक्तियों को रिवाज बनाकर, इनके माध्यम से उन्होंने अपने विस्मय को प्रकटरूप प्रदान किया।

पाश्चात्य संस्कृति में, इन रिवाजों ने ग्रीक नाट्य-कला को जन्म दिया। उसका भी वही अभिप्राय था—नैसर्गिक सत्ता या जीवन की पहेलियों को समझना। पूर्वी गोलार्ध में नृत्य और गान के रिवाज, प्रदर्शन की सूक्ष्म भेदयुक्त व कुशल अभिव्यक्तियों के रूप में विकसित हुए जैसे कि भारतीय शास्त्रीय संगीत व शास्त्रीय नृत्य; 'सीच्छु' यानी चीनी संगीत-नाटक [ऑपेरा]; और 'बुनरकु' यानी कठपुतलियों का जापानी खेल [ये मात्र कुछ ही उदाहरण हैं]। आज, आधुनिक समय में कहानी कहने की कला हर समाज में अनेकानेक रूपों में मौजूद है।

सिद्धयोग पथ पर बाबा मुक्तानन्द और गुरुमाई चिद्विलासानन्द, दोनों ने ही कहानियाँ पढ़ने व सुनाने को अत्यधिक महत्त्व देते हुए उस पर बल दिया है—वे कहानियाँ जो साधना करने व धर्मसंगत जीवन व्यतीत करने की इच्छा को जगाएँ।

मैं इस बात के लिए अत्यन्त कृतज्ञ हूँ कि मैं सिद्धयोग पथ का अनुसरण करता हूँ जहाँ उत्तमोत्तम कहानियाँ पढ़ना व सुनाना, अभ्यासों का एक अंग है। अच्छी कहानियाँ मुझे सदैव प्रिय रही हैं। जब मैं बड़ा हो रहा था तो अनेक बच्चों की ही तरह मेरी कल्पनाशक्ति भी मुझे सुदूर लोकों में ले जाया करती और सौन्दर्य, विस्मय व साहसिक कार्यों के स्वप्न देखने के लिए प्रेरित किया करती। इस आरम्भिक सम्मोहन ने ही मुझे थिएटर में अभिनय करने की ओर आकर्षित किया।

यह परिचय लिखते हुए, मैंने पाया कि वे सिद्धयोग परम्परा की कहानियाँ ही थीं जिन्होंने सर्वप्रथम मेरे मन में इस पथ के लिए प्रेम उत्पन्न किया। जब मैं कॉलेज में था, तब मैंने बाबा जी की आध्यात्मिक आत्मकथा, 'चित्शक्ति विलास' पढ़ी थी जिसमें उन्होंने अपने आत्मसाक्षात्कार की यात्रा का वर्णन किया है। उसने मेरा दिल जीत लिया, क्योंकि यही थी वह खोज जिसे मैं जीवनभर तलाशता रहा था! अपने करुणामय शब्दों के द्वारा बाबा जी ने मुझे यह सिखाया कि मानव-जीवन

के जादू का रहस्य खुलता है, गुरुकृपा के मार्गदर्शन में किए गए ध्यान के अभ्यास से। आध्यात्मिक यात्रा का वर्णन करने वाले वे ऐसे शब्द थे जिन्हें इसके पूर्व किसीके द्वारा कहा नहीं गया था। मुझे ऐसा लगा कि जो यात्रा मैं तय करना चाहता हूँ, उसका नक़्शा बाबा जी मेरे लिए बना रहे हैं और उन गुप्त अचम्भों का भी, जो मुझे इस यात्रा के मार्ग में मिल सकते हैं।

मैं गुरुमाई जी की पुस्तकें पढ़ता रहा, उनके प्रवचन सुनता रहा जिनमें प्रायः आध्यात्मिक कहानियाँ भी होती हैं। गुरुमाई जी मेरी प्रिय कहानीकार बन गईं। उन्हें कहानियाँ कहते हुए सुनना मेरे लिए ऐसा ही था और है, जैसे मैं किसी पर्वतशिखर के कगार पर खड़ा देख रहा हूँ कि स्वर्णिम सूर्य आकाश को आलोकित कर रहा है। मैं उनके शब्दों को सुनता हूँ और मुझे यह अनुभव होता है कि वे धीरे-से मेरे हृदय को बता रही हैं : *हाँ, हाँ, यही है वह महान सत्य। यही है* ***तुम्हारा*** *महान सत्य। यही है जो तुम वास्तव में हो।*

हो सकता है कि आपको यह मालूम हो गया हो कि सिद्धयोग पथ पर कहानी सुनाने की परम्परा की सराहना आप भी करते हैं। या हो सकता है कि सिद्धयोग की कहानियों को पढ़ने, सुनने व उन पर चिन्तन-मनन करने का आनन्द लेना आपने अभी शुरू ही किया हो—अकेले भी और परिवार, मित्रों, शिक्षकों व सिद्धयोग के संगी-साथियों के साथ मिलकर भी। दोनों ही स्थितियों में, इस वर्ष आपको अपने अध्ययन को आगे बढ़ाने का और सिद्धयोग की कहानियाँ सुनने के माध्यम से अपनी कल्पनाशक्ति को विकसित करने का अवसर मिलेगा।

वर्ष २०२० के लिए श्रीगुरुमाई ने कुछ कहानियाँ चुनी हैं जिनसे आपको उनके सन्देश के अध्ययन में मदद मिलेगी। ये कहानियाँ सिद्धयोगियों द्वारा प्रस्तुत की गई हैं और ये सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर *Explore & Study Gurumayi's Message for 2020* [वर्ष २०२० के लिए श्रीगुरुमाई के सन्देश का अध्ययन व अन्वेषण] के अन्तर्गत दी जा रही हैं।

प्रत्येक कहानी लिखित रूप में प्रस्तुत की गई है और कथावाचक द्वारा सुनाई भी गई है। श्रीगुरुमाई के सन्देश पर आधारित अभ्यास-पुस्तिका के लिए पंजीकरण कराके आप इन कहानियों को पढ़ सकते हैं। मैं आपको प्रोत्साहित करता हूँ कि जब आप इन रिकॉर्डिंग्ज़ को चलाएँ, तब पूरी तरह जागरूक रहकर सुनें तथा, कहानी की भाषा व उससे मिलने वाली शिक्षा को, बौद्धिक स्तर के साथ-साथ सूक्ष्म स्तर पर भी समझने का प्रयास करें। पूर्वकाल में कान ही कहानियों तथा ज्ञान को ग्रहण करने वाले मुख्य साधन हुआ करते थे। विशेषरूप से पुरातन समाज में ऐसा ही होता था जिसने अपनी विरासत और संस्कृति को मौखिक परम्परा द्वारा संरक्षित रखा।

आज हम टेक्नोलॉजी के माध्यम से एक बार फिर कहानियाँ सुनने की सरल-सी विधि की ओर लौट रहे हैं। सार्वभौमिक सिद्धयोग संघम्, एक-सी कहानियों को एक-साथ सुन रहा है व ग्रहण कर रहा है; इन कहानियों के हमारे अध्ययन द्वारा इन्हें अपना कार्य करने दे रहा है, और वह कार्य है, हमें अपने आस-पास के संसार से, एक-दूसरे से व हमारे अपने अन्तरतम से जोड़ने का कार्य।

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।